चतुर्थ सेमेस्टर (एमए) हिन्दी

कहानी

PAPER EC – 01

चीफ की दावत : भीष्म साहनी

भीष्म साहनी की कहानी "चीफ की दावत" का मुख्य उद्देश्य मध्यमवर्गीय व्यक्ति की अवसरवादिता और उसकी महत्वकांक्षा में पारिवारिक रिश्तों के विघटन को उजागर करना है। मध्यमवर्ग के व्यक्ति की यह सामान्य विशेषता होती है कि वह सदैव उच्च वर्ग में शामिल होने के अवसरों की तलाश में रहता है, चाहे वह स्वयं निम्न वर्ग से मध्यम वर्ग में पहुँचा क्यों न हो। औद्योगीकरण के विकास के साथ भारत में मध्य वर्ग का तेजी से विकास हुआ। शिक्षा प्राप्त कर, अच्छी नौकरी पाकर या आजीविका का अन्य साधन पाकर निम्न वर्ग का व्यक्ति मध्य वर्ग में पहुँचकर उच्च वर्ग की संस्तुति के लिए मध्य वर्ग के मुँह की ओर ताकने लगा।

'चीफ की दावत' कहानी का नायक श्यामनाथ दफ्तर की नौकरी पाकर उच्च पद पाने की महत्वाकांक्षा रख उसकी पूर्ति के लिए अपने दफ्तर के विदेशी चीफ की खुशामद में लगता है। चीफ की दावत का प्रबंध अपने घर में करके वह अपनी बुढ़ी माँ की उपेक्षा करता है। महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए माँ के साथ उसका खून का रिश्ता भी गौण हो जाता है। आधुनिक परिवारों में बूढ़ों की किस प्रकार उपेक्षा होती है,

उनकी क्या दुर्दशा होती है, यह स्थिति भी इस कहानी में स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

आधुनिक दिखने की चाह में मध्यवर्गीय व्यक्ति प्रदर्शन–प्रिय हो जाता है और बूढ़ी माँ चीफ की दावत के समय प्रदर्शन योग्य वस्तु नहीं, बल्कि कुड़े की तरह कहीं छिपाने की वस्तु हो जाती है। इस झूठी प्रदर्शनप्रियता और छद्म आधुनिकता की कलात्मक व्यंजना कहानी में साफ तौर पर उभरकर सामने आती है।

"चीफ की दावत" पारिवारिक जीवन मूल्यों के विघटन को स्पष्ट करने के उद्देश्य को लेकर लिखी गई कहानी है। लेकिन माँ की ममता और उसके महत्व की स्थापना के माध्यम से लेखक ने माँ के रूप तथा स्वस्थ पुरानी परंपरा को वरेण्य सिद्ध किया है। श्यामनाथ जिस माँ को उपेक्षित होने लायक वस्तु मानता है, उसी के माध्यम से उसकी पदोन्नति होती है। चीफ की दावत कहानी के घटनाक्रम के विकास को दो भागों में बाँटकर इसका विश्लेषण किया जा सकता है।

पहले भाग में चीफ की दावत के लिए की जा रही तैयारी का दृश्य है। श्यामनाथ और उसकी पत्नी घर की सजावट, विशेषतः ड्राइंग रूम की सजावट के लिए विशेष चिंतित हैं। आधुनिक दिखने के लिए और उच्च वर्ग के विदेशी चीफ की नजरों में सुसंस्कृत दिखने के लिए यह प्रदर्शनप्रियता उनके लिए आवश्यक हो गई है। घर को सजाना सामान्यतः सुरूचि का परिचायक है। हर कोई अपने घर को अच्छी दशा में देखना

चाहता है। यह सुरूचि, सम्पन्नता मानव का विशेष गुण है। सुसंस्कृत और सुरूचिसम्पन्न होना एक बात है, पर वैसा दिखाना दूसरी बात है, अर्थात् प्रदर्शनप्रियता है। श्यामनाथ द्वारा की जा रही घर की सजावट चीजों को छिपाना, उसका स्थान बदलना, सुसंस्कृत होने का यह प्रयास पाठकों को हास्यास्पद लगने लगता है। हद तब हो जाती है जहाँ बूढ़ी माँ और कुड़े में कोई अंतर नहीं रह जाता। कूड़े की तरह माँ भी छिपाने की वस्तु बन जाती है, तब वहाँ सुरूचि सम्पन्नता और आधुनिकता बोध नहीं, व्यक्ति की फूहड़ता और टुच्चापन प्रकट हो जाता है। कहानी के इस भाग में कहानीकार ने श्यामनाथ को एक प्रतिनिधि बनाकर आधुनिकता बोध से ग्रसित मध्यवर्गीय व्यक्ति की छद्म सुसंस्कृति प्रदर्शनप्रियता की प्रवृति को स्वाभाविक तथा कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

श्यामनाथ को जब लगता है कि माँ को छिपाया नहीं जा सकता और उसे पड़ोसी के पास भेजने से उनकी नाक कट जाएगी तब उसके मन में एक और चिंता जन्म लेती है कि माँ को किस तरह तैयार किया जाए उसे कहाँ बिठाया जाए जिससे चीफ को किसी प्रकार की परेशानी न हो जिसकी वजह से उसकी पदोन्नति में बाधा पहुँचे या उसकी असलियत सामने आ जाए। इसलिए वह अपनी माँ को तरह–तरह के निर्देश देता है और माँ अपने बेटे की खुशी के लिए सब कुछ सुनती और करती है। श्यामनाथ अपनी माँ से नये कपड़े और जेवर पहनने के लिए कहता है। माँ कहती है–"बेटे, चूड़ियाँ कहाँ से लाऊँ, सब जेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक

गए।" यह वाक्य श्यामनाथ को तीर की तरह लगता है। इस संवाद से स्पष्ट हो जाता है कि उसकी पढ़ाई में माँ ने जेवर बेचकर जो प्रेम और त्याग का प्रमाण दिया था उसके जिक्र मात्र से वह खिन्न हो जाता है। उसकी खिन्नता इस बात को प्रमाणित करती है कि वह अपने उपर किए गए माँ के एहसानों को स्वीकार नहीं करता और अपनी माँ के वात्सल्य का अपमान इन शब्दों में करता है–"जितना दिया था उससे दुगुणा ले लेना।"

"चीफ की दावत" "नयी कहानी" के दौर की एक विशिष्ट कहानी है। इसमें मध्यवर्गीय मानसिकता और पारिवारिक संबंध बड़ी कुशलता से समाविष्ट हुए हैं। भीष्म साहनी यथार्थवादी प्रगतिवादी कहानीकार हैं। इन्होनें परंपरा और पारिवारिक संबंधों के महत्व को स्वीकार किया है। इस प्रकार कहानीकार ने इस कहानी के जरिए माँ को पुरानी परंपरा का प्रतीक के रूप में चित्रित करने की कोशिश की है।

माँ की वजह से ही श्यामनाथ का चीफ के साथ एक पारिवारिक रिश्ता कायम होता है। और माँ रूपी परंपरा के कारण ही श्यामनाथ की पदोन्नति की आशा भी बंधती है। साथ ही उसके साथ वह हार्दिक रूप से जुड़ भी जाता है। इन तथ्यों का भीष्म साहनी ने माँ के माध्यम से अत्यंत बारीकी से संकेतित कर दिया है। गंदे–कूड़े की तरह छिपाने की वस्तु बनने वाली माँ श्यामनाथ के लिए पदोन्नति का सार्थक दरवाजा बनकर

प्रतिष्ठित होती है। इस प्रकार कहानीकार ने मध्यवर्गीय यथार्थ के टुच्चेपन पर एक प्रगतिशील परिप्रेक्ष्य अपनाया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि "चीफ की दावत" कहानी का अंत बड़ा ही करूण और स्वाभाविक है। कहानी के अंत में कहानीकार ने माँ की दयनीय अवस्था का जो चित्र खींचा है वह बड़ा करूण तथा मार्मिक है। साथ ही मध्यवर्गीय व्यक्ति की प्रदर्शनप्रियता, आधुनिकता और सुसंस्कृति का पाखंड पारिवारिक जीवन मूल्यों का विघटन बूढ़ों की दुर्दशा आदि समस्याओं को श्यामनाथ के क्रियाकलापों के माध्यम से सफलतापूर्वक उद्घटित कर लेखक ने अपने को यथार्थवादी प्रगतिवादी कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठापित किया है। इस प्रकार लेखक अपने उद्देश्य को सफलीजामा पहनाने में पूर्णतः सफल प्रतीत होता है।

प्रस्तुतकर्ता
आयुषी रॉय
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id : ausheeroy.roy@gmail.com